एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 07 (जुलाई, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

राजस्थान के भौगोलिक संकेत (जीआई टैग)

संदीप कुमार[1] एवं *अमित कुमार[2]
[1]सहायक आचार्य, प्रसार शिक्षा, सुरेंद्र कौर मेमोरियल कृषि महाविद्यालय, पदमपुर, राजस्थान, भारत
[2]कीट विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mahechamit211@gmail.com

भौगोलिक संकेत (Geographical Indication - जीआई टैग) एक प्रकार का बौद्धिक संपदा अधिकार है जो किसी उत्पाद को एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से जोड़ने के लिए दिया जाता है। यह टैग उस उत्पाद की गुणवत्ता, प्रतिष्ठा और विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाता है जो मुख्य रूप से उस क्षेत्र की मिट्टी, जलवायु, परंपराओं और मानव कौशल के कारण होती हैं। भारत में, भौगोलिक संकेत वस्तुओं का पंजीकरण और संरक्षण अधिनियम, 1999 के तहत जीआई टैग प्रदान किए जाते हैं।

राजस्थान, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अद्वितीय शिल्प कौशल के लिए जाना जाता है। इस राज्य के कई उत्पादों को उनकी विशिष्टता और क्षेत्रीय पहचान के लिए जीआई टैग प्राप्त हुए हैं। ये जीआई टैग न केवल इन उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाते हैं, बल्कि स्थानीय कारीगरों और उत्पादकों के हितों की भी रक्षा करते हैं।

आइए राजस्थान के कुछ महत्वपूर्ण जीआई टैग वाले उत्पादों पर एक नज़र डालते हैं:

1. जयपुर की नीली मिट्टी के बर्तन (Jaipur Blue Pottery): जयपुर की नीली मिट्टी के बर्तन अपनी विशिष्ट नीले और सफेद रंग की कलाकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इन बर्तनों पर हाथ से की गई जटिल नक्काशी और पारंपरिक डिज़ाइन इन्हें अद्वितीय बनाते हैं। यह शिल्पकारी सदियों से जयपुर में चली आ रही है और पीढ़ी दर पीढ़ी कारीगरों द्वारा इसे आगे बढ़ाया जा रहा है। 2008 में जयपुर ब्लू पॉटरी को जीआई टैग मिला।

2. बगरू हाथ-ब्लॉक प्रिंट (Bagru Hand Block Print): बगरू, जयपुर के पास स्थित एक छोटा सा शहर है जो अपने पारंपरिक हाथ-ब्लॉक प्रिंटिंग के लिए जाना जाता है। इस प्रक्रिया में प्राकृतिक रंगों और लकड़ी के ब्लॉकों का उपयोग करके कपड़े पर विशिष्ट डिज़ाइन छापे जाते हैं। बगरू प्रिंट की विशेषता इसके मिट्टी के रंग और ज्यामितीय पैटर्न हैं। 2009 में बगरू हाथ-ब्लॉक प्रिंट को जीआई टैग प्रदान किया गया।

3. सांगानेरी हाथ-ब्लॉक प्रिंट (Sanganeri Hand Block Print): सांगानेर, जो जयपुर के बाहरी इलाके में स्थित है, भी अपने उत्कृष्ट हाथ-ब्लॉक प्रिंटिंग के लिए प्रसिद्ध है। सांगानेरी प्रिंट में बारीक और जटिल डिज़ाइन होते हैं, जिनमें अक्सर फूल, पत्तियां और अन्य प्राकृतिक रूपांकन शामिल होते हैं। यह प्रिंट अपनी जीवंत रंगों और नाजुकता के लिए जाना जाता है। 2010 में सांगानेरी हाथ-ब्लॉक प्रिंट को जीआई टैग मिला।

4. कठपुतली (Kathputli): कठपुतली राजस्थान की एक पारंपरिक कला है जिसमें लकड़ी की गुड़ियों का उपयोग करके कहानियाँ सुनाई जाती हैं। ये रंगीन गुड़िया धागों से बंधी होती हैं और एक कुशल कठपुतली कलाकार द्वारा नियंत्रित की जाती हैं। राजस्थानी संस्कृति और लोककथाओं में कठपुतली का महत्वपूर्ण स्थान है। 2008 में राजस्थानी कठपुतली को जीआई टैग मिला।

5. मोजरी (Mojari): मोजरी राजस्थान की पारंपरिक चमड़े की जूती है। ये हाथ से बनी जूतियाँ अपनी सुंदरता, आरामदायकता और टिकाऊपन के लिए जानी जाती हैं। इन पर अक्सर जटिल कढ़ाई और सजावट की जाती है, जो इन्हें एक विशिष्ट राजस्थानी रूप देती है। विभिन्न क्षेत्रों में मोजरी के अलग-अलग डिज़ाइन और शैलियाँ प्रचलित हैं।

6. फुलकारी (Phulkari): हालाँकि फुलकारी मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा से संबंधित है, लेकिन राजस्थान के कुछ हिस्सों में भी इसकी एक विशिष्ट शैली पाई जाती है। फुलकारी का अर्थ है "फूलों की कारीगरी" और यह एक प्रकार की कढ़ाई है जो आमतौर पर ओढ़नी और अन्य कपड़ों पर की जाती है। राजस्थानी फुलकारी में स्थानीय रूपांकनों और रंगों का उपयोग होता है।

7. कोटा डोरिया (Kota Doria):कोटा डोरिया एक विशिष्ट प्रकार की हल्की और पारदर्शी सूती और रेशमी साड़ी है जो राजस्थान के कोटा और बूंदी क्षेत्रों में बुनी जाती है। इसकी विशेषता इसके चौकोर बुनाई पैटर्न (खटिया) हैं, जो इसे एक अलग पहचान देते हैं। कोटा डोरिया साड़ियाँ अपनी आरामदायकता और सुरुचिपूर्ण लुक के लिए पूरे भारत में लोकप्रिय हैं। 2005 में कोटा डोरिया को जीआई टैग मिला।

8. पोकरण मिट्टी के बर्तन (Pokaran Pottery):पोकरण, जो जैसलमेर जिले में स्थित है, अपने विशिष्ट प्रकार के मिट्टी के बर्तनों के लिए जाना जाता है। इन बर्तनों का रंग आमतौर पर टेराकोटा होता है और इन पर सरल लेकिन आकर्षक डिज़ाइन बने होते हैं। पोकरण की मिट्टी की गुणवत्ता और कारीगरों का कौशल इन बर्तनों को विशेष बनाता है।

9. थेवा कला (Thewa Art):थेवा कला प्रतापगढ़, राजस्थान की एक अनूठी और जटिल आभूषण कला है। इसमें कांच के एक टुकड़े पर सोने की पतली परत को उकेर कर जटिल डिज़ाइन बनाए जाते हैं। यह कला सदियों पुरानी है और प्रतापगढ़ के कुछ ही परिवारों तक सीमित है। थेवा कला अपनी बारीकी और सुंदरता के लिए विश्वभर में पहचानी जाती है। 2008 में थेवा कला को जीआई टैग मिला।

10. बीकानेरी भुजिया (Bikaneri Bhujia):बीकानेर शहर अपनी मसालेदार और कुरकुरी भुजिया के लिए प्रसिद्ध है। यह बेसन और मसालों से बनी एक नमकीन स्नैक है जिसका स्वाद और बनाने की विधि इसे अन्य भुजिया किस्मों से अलग करती है। बीकानेरी भुजिया राजस्थान की एक लोकप्रिय पहचान बन चुकी है। 2010 में बीकानेरी भुजिया को जीआई टैग मिला।

11. पाली की बंधेज (Pali Bandhej):बंधेज, जिसे टाई-डाई के रूप में भी जाना जाता है, राजस्थान की एक पारंपरिक कपड़ा रंगाई तकनीक है। पाली, राजस्थान का एक महत्वपूर्ण केंद्र है जहाँ उच्च गुणवत्ता वाले बंधेज वस्त्र तैयार किए जाते हैं। बंधेज में कपड़े को छोटे-छोटे बिंदुओं में बांधकर और फिर रंगकर विशिष्ट पैटर्न बनाए जाते हैं।

12. दाबू प्रिंट (Dabu Print):दाबू प्रिंट राजस्थान की एक प्राचीन मिट्टी प्रतिरोधी मुद्रण तकनीक है। इस प्रक्रिया में कपड़े पर मिट्टी, गोंद और चोकर का मिश्रण लगाया जाता है, और फिर इसे प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है। मिट्टी वाले हिस्से रंग से अप्रभावित रहते हैं, जिससे विशिष्ट डिज़ाइन बनते हैं।

13. नागौर की चमड़ा शिल्प (Nagaur Leather Craft):नागौर अपने उच्च गुणवत्ता वाले चमड़े के उत्पादों के लिए जाना जाता है। यहाँ के कारीगर चमड़े से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाते हैं, जिनमें जूते, बैग और अन्य सामान शामिल हैं। नागौर के चमड़े की गुणवत्ता और कारीगरों की कुशलता इसे विशेष बनाती है।

14. **सांगरी (Sangri- A Culinary Gem of Rajasthan)** हाल ही में, राजस्थान के प्रसिद्ध फली सांगरी को भी जीआई टैग मिला है स्वामी केशवानंद राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने सांगरी को यह पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सांगरी राजस्थान की एक पारंपरिक सब्जी है, जो खेजड़ी के पेड़ की फलियों से प्राप्त होती है। खेजड़ी, जिसे 'राजस्थान का कल्पवृक्ष' भी कहा जाता है

जीआई टैग का महत्व

राजस्थान के उत्पादों के लिए जीआई टैग का महत्व कई गुना है:

- **पहचान और विशिष्टता:**यह राजस्थानी उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में एक विशिष्ट पहचान दिलाता है।
- **गुणवत्ता की गारंटी:**जीआई टैग उपभोक्ताओं को उत्पाद की गुणवत्ता और प्रामाणिकता के बारे में आश्वस्त करता है।
- **स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा:**यह स्थानीय कारीगरों और उत्पादकों को उनके अद्वितीय कौशल और उत्पादों के लिए उचित मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है।
- **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:**जीआई टैग पारंपरिक शिल्प और तकनीकों को जीवित रखने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **नकली उत्पादों से सुरक्षा:**यह कानूनी संरक्षण प्रदान करता है, जिससे इन विशिष्ट उत्पादों की नकल को रोका जा सकता है।

निष्कर्ष

राजस्थान के जीआई टैग वाले उत्पाद न केवल राज्य की समृद्ध कला और शिल्प कौशल का प्रतीक हैं, बल्कि यह स्थानीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन जीआई टैगों के माध्यम से, राजस्थान के अद्वितीय उत्पाद विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं।